3.गुरु गोविंद दोऊ खड़े----------गोविंद दियो बताए

प्रसंग-प्रस्तुत दोहे के रचयिता कबीर दास जी हैं। दोहे के माध्यम से कबीरदास ने गुरु की महिमा को बताया है।

व्याख्या-कबीर दास से कहते हैं कि गुरु और गोपी जब दोनों खड़े हो तो हमें अपने गुरु को ही पहले नमन करना चाहिए क्योंकि गुरु ही वह व्यक्ति है जो हमें सत्य का ज्ञान करता है जो हमें ईश्वर की पहचान करवाता है। अतः गुरु का स्थान ईश्वर से भी पहले होता है।

काव्य सौंदर्य -दोहा उपदेशात्मक है

*दोहे में गुरु की महिमा को बताया गया है।

4. अति का भला----------भली न धूप।

प्रसंग-प्रस्तुत दोहा कबीर दास द्वारा रचित है। दोहे के माध्यम से कबीर ने किसी भी वस्तु के अति होने को हानिकारक बताया है।

व्याख्या-कबीर दास जी कहते हैं कि आवश्यकता से अधिक बोलने और आवश्यकता से अधिक चुप रहना दोनों ही हानिकारक होते हैं क्योंकि अधिक बोलने पर विवाद का डर बना रहता है और अत्यधिक चुप रहने से यह व्यक्ति की कायरता को दर्शाता है।

ठीक वैसे हीअत्यधिक बारिश भी हानिकारक है और अत्यधिक धूप का होना भी हानिकारक है। अत्यधिक बारिश होने पर बाढ़ का भय बना रहता है और अत्यधिक धूप होने से गर्मी सहनशक्ति से बाहर हो जाती है। अतः हमें संतुलन में रहकर बात कहना चाहिए। धूप और बारिश भी संतुलित होना चाहिए ।

काव्य सौंदर्य

*दोहा उपदेशात्मक है

*किसी भी वस्तु की अति को बुरा बताया गया है।

5. ऐसी बानी बोलिए------शीतल होय सीतल होय।

प्रसंग-दोहा कबीर दास द्वारा रचित है। दोहे की माध्यम से मधुर वाणी की महिमा को बताया गया है।

व्याख्या-कबीर दास जी कहते हैं कि हमें ऐसी बनी बोलनी चाहिए जो हमारे मन के अहंकार से मुक्त हो, दूसरों के हृदय को शीतलता दें तथा खुद को भी शीतलता प्रदान करें।

काव्य सौंदर्य

1. दोहा उपदेशात्मक है।
2. दोहे के माध्यम से मधुर वाणी की महिमा को बताया गया है।

6. निंदक नियरे--------निर्मलकर सुभाय।

प्रसंग-प्रस्तुत दोहा कबीर दास द्वारा रचित है दोहे के माध्यम से कबीर ने निंदक को उपयोगी बताया है।

व्याख्या कबीर दास जी कहते हैं कि निंदक या आलोचक को हमेशा अपने पास रखना चाहिए क्योंकि निंदक के हमें अपने अवगुणों को पता चलता है निंदक हमारी अवगुणों को दर्पण की तरह साफ कर देता है। निंदक बिना पानी और साबुन के हमें निर्मल कर देता है।

काव्य सौंदर्य

*दोहा उपदेशात्मक है

*दोहे के माध्यम से कबीर दास ने निंदको को उपकारी बताया है।